झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन चाहते तो 1993 में ही जब नरसिम्हा राव की सरकार थी, तब अलग झारखंड का निर्माण करा लेते, पर उन्होंने इसलिए ऐसा नहीं किया. दो करोड़ रुपये में झारखंड की अस्मिता को बेचने का काम किया.
रघुवर दास, मुख्यमंत्री.

पूर्व सांसद फुरकान अंसारी व प्रदीप कुमार बलमुचु, पूर्व मंत्री बंधु तिर्की जैसे महत्वपूर्ण नेताओं की सुरक्षा में लापरवाही बरती गयी .महुआटांड़ में चुनावी सभा के मद्देनजर एक भी पुलिस बल की तैनाती नहीं की गयी थी.
किशोर शाहदेव, कांग्रेस.

गप्पू चचा

फोकटे में मिला बुके देकर अपना बोझा उतार लिये नेताजी

एगो प्रत्याशी हैं, धनलक्ष्मी इन पर खासे मेहरबान हैं. अपने ठाट-बाट के लिए जाने जाते हैं. पुराने रईस हैं. इस बार दिल्ली से टिकट का जुगाड़ भी लगा लिया है. कई को पटकनिया दे दी है. अब राजधानी से एनएच-33 पर इनकी गाड़ी दौड़ेगी. राजधानी से सटले सीट पर उतरे हैं. गप्पू चचा का जाने कैसे जान गये. एक दिन एक इनके पार्टी के कैडर मिलने घर पहुंच गये. इनका घरवा राजधानी का चकाचक आलीशान बंगला है. कैडर तो सुंदर बुके बना कर मिलने पहुंचे, त पता चला कि नेता जी बाथरूम में हैं. बेचारा इंतजार कर थक गया, तो पता चला कि बाथरूम में डेढ़ घंटा रहेंगे. हाथ में बुके का बोझा लेकर इधर-उधर दौड़ते रहे. मन में खुशी था कि नेताजी को टिकटवा भेंटा गया है, तो मिल कर बता ही दें. इसके बाद वह उनसे मिलने उनके होटल पहुंचे. नेताजी को बुके बढ़ाया, तो बोले इधर रख दो. कैडर बेचारा क्या करता, रख दिया. मायूस भी था. इधर-उधर की बात होनी लगी, तो दूसरे नेता पहुंचे बधाई देने. हाथ खाली था, सामने बुके देखे तो मनवा पुलकित हो गया. इधर-उधर देखा और झट से बुके उठा लिये. फिर प्रत्याशी महोदय को भेंट करने पहुंचे. अंदरे-अंदरे खुश थे कि बुके बनवाया भी नहीं, फोकटे में भेंटा गया. काम भी निकल गया. राजनीति का गजब फेरा है भाई.

ई ठीक है

पांच वर्षों में एक भी प्रेस कांफ्रेंस नहीं, पर सितारों के साथ खूब पीआर स्टंट. चुनाव के वक्त नये-नये हथकंडों से कुछ नहीं बदलने वाला मोदी जी. बदले जायेंगे, तो बस आप और आपकी जुमला पार्टी.
अजयनाथ शाहदेव, कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता

2019 में भी आप दिल्ली में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत सरकार बनायें. ऐसी सरकार जो आपकी भावनाओं के हिसाब से फैसले लेने में सक्षम हो. इसलिए, झारखंड की 14 सीट अपने मत से मोदी जी के नाम करें. विकसित झारखंड, विकसित भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करें.
अमर कुमार बाउरी, मंत्री

गंगा-जमुनी तहजीब भारतीय परंपरा का हिस्सा रही है. पर, भाजपा ने सत्ता में आने के बाद देश को बांटने और नफरत की खाई चौड़ी करने की राजनीति की. प्रेम, सद्भाव और आपसी भाइचारगी के बीच मिल कर रहनेवालों को लड़ाने वाली सरकार को सत्ता में रहने का क्या अधिकार है.
सुबोधकांत सहाय, पूर्व सांसद सह रांची से कांग्रेस प्रत्याशी

यही है मेरी पसंद

जो जनता के काम को अपना और देश का काम समझे

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है. इस बार भी लोकतंत्र के इस महापर्व में विभिन्न पार्टियों के बीच सरकार बनाने की होड़ है.

ऐसे में एक होनहार और ईमानदार सांसद कठिन प्रतीत हो सकता है. फिर भी हमें देश के एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटना चाहिए और मतदान जरूर करना चाहिए. अपने विवेकानुसार अपना सांसद चुनें. वैसा सांसद चुनें जो स्वच्छ छवि वाला हो, जो धर्म जाति और अन्य भेदभाव से ऊपर उठकर विकास के प्रति प्रतिबद्ध हो. जमीनी स्तर से जुड़ा हो. लोगों की समस्याएं सुनने को तैयार हो. जो जनता की जरूरतों को अपनी और देश की जरुरत समझे.
राहुल राज महली

इनकी भी सुनें

हमारा सांसद आदर्शवादी, समानतावादी, नैतिकतावादी और कर्मयोगी होना चाहिए. वह अपने क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं मुहैया कराने के लिए कृतसंकल्प हो, जो लोगों की समस्याओं को भलीभांति महसूस करे और सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाते हुए क्षेत्र की समस्या को दूर कर सके.
मो आरिफ

हमारा सांसद रिमोट कंट्रोल से चलनेवाला नहीं होना चाहिए. वह युवाओं की समस्याओं की ओर ध्यान दे. वह ऐसा हो, जो बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा से जुड़ी क्षेत्र के मतदाताओं की जरूरतों को समझे और अपने क्षेत्र को विकास की ओर ले जाये. यहां के युवाओं में जोश भरा है, बस देश के विकास के लिए एक अच्छा सांसद चाहिए.
शंभु केसरवानी

देश के लोकतंत्र की शक्ति यहां के लोग हैं. आगामी लोकसभा चुनाव के लिए ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं से अनुरोध है कि वे मतदान जरूर करें और इस विषय पर दूसरों के बीच भी जागरूकता लायें. अपना वोट देकर देश के लोकतंत्र को एक नयी ऊंचाई तक पहुंचाने का प्रयास करें.
प्रभात रंजन

हमारे सांसद का व्यक्तित्व अनुकरणीय हो. जिसे देख कर लगे कि वह एक विश्वगुरु देश का सांसद है. वह आमलोगों की तकलीफों को

अपनी पीड़ा समझने वाला हो. पढ़ा लिखा हो अपने क्षेत्र की अधिसंख्य जनता से सीधे संपर्क में हो. जनता को कभी भी उससे मिलने, उसके सामने अपनी बातें रखने के लिए मशक्कत न करनी पड़े. जाति, धर्म, मजहब जैसी संकीर्णता से उपर हो.
बिपता गोप

2014 में झाविमो व झामुमो को मिले संयुक्त वोट भाजपा के वोट से ज्यादा

विद्युत का खूंटा हिलाने के लिए चंपई को चाहिए एकजुट विपक्ष

संजीव भारद्वाज ▷ जमशेदपुर

2014 में लोकसभा चुनाव के सात माह बाद ही झारखंड में विधानसभा चुनाव भी हुए. लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी विद्युतवरण महतो ने जहां जीत हासिल की थी, वहीं जमशेदपुर लोकसभा के अंतर्गत आनेवाली छह विधानसभा में चार में भाजपा प्रत्याशी, एक में भाजपा की सहयोगी आजसू पार्टी के प्रत्याशी और एक सीट पर झामुमो प्रत्याशी को जीत हासिल हुई. बहरागोड़ा, घाटशिला, पोटका और जुगसलाई में भाजपा के साथ सीधे मुकाबले में जहां झामुमो प्रत्याशी थे, वहीं जमशेदपुर पूर्वी और पश्चिमी विधान सभा में भाजपा के साथ सीधे मुकाबले में कांग्रेस प्रत्याशी थे. लोकसभा चुनाव में एक बार फिर अपनी ताकत को दिखाना भाजपा के लिए चुनौती होगी. लोकसभा चुनाव में जहां विद्युतवरण महतो भाजपा के प्रत्याशी हैं, जबकि महागठबंधन की ओर से उन्हें कड़ी टक्कर झामुमो के केंद्रीय उपाध्यक्ष चंपई सोरेन दे रहे हैं. विधानसभा चुनाव में जिस तरह अपना प्रदर्शन भाजपा ने किया, उसे बरकरार रखने में किसी तरह कोई कसर नहीं छोड़ेगा, जबकि चंपई सोरेन के बारे में एक बात सर्वविदित है कि वे अपनी चुनावी रणनीति बेहतर ढंग से बनाते हैं और उसे खुद काफी तरीके से लागू करते हैं. महागठबंधन के उम्मीदवार झामुमो नेता चंपई सोरेन को कांग्रेस, झाविमो, राजद का पूरा समर्थन हासिल रहेगा, जबकि सीपीआइ-सीपीएम ने अभी अपने पत्ते नहीं खोले हैं. भाजपा के साथ आजसू पार्टी रहेगी, जबकि टीएमसी ने अपना प्रत्याशी देने का घोषणा कर दी है. झामुमो प्रत्याशी के समर्थन में अन्य दल अपना कितना वोट टर्न करा पायेंगे, इसके लिए वक्त का इंतजार करना होगा.

राजनीतिक जानकारों की मानें, तो बहरागोड़ा में भाजपा प्रत्याशी को टक्कर देनेवाले समीर महंती इस बार भाजपा में हैं. इसलिए बहरागोड़ा में झामुमो के लिए मुश्किल का सामना करना पड़ेगा. घाटशिला में कांग्रेस के दिग्गज नेता डॉ प्रदीप कुमार बलमुचु ने अपनी परंपरागत सीट से अपनी बेटी सेंड्रिला बलमुचु को मैदान में उतारा था. विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी को यहां से जीत हासिल हुई थी, जबकि कांग्रेस तीसरे स्थान पर थी. गठबंधन को वोट टर्न कराना यहां चुनौती भरा काम हो सकता है. पोटका में स्थिति साफ है. यहां भाजपा और झामुमो के बीच सीधा मुकाबला होगा. भाजपा के खिलाफ वाले सभी झामुमो प्रत्याशी के समर्थन में वोट करने की स्थिति में रहेंगे. झामुमो को जहां देहात का आसरा है, वहीं भाजपा को शहरी वोटों पर पूरा भरोसा है. जुगसलाई में भाजपा ने अपने सहयोगी आजसू पार्टी के प्रत्याशी के समर्थन में वोट को टर्न कराने का काम किया था, जिसका साफ असर परिणाम में देखने को मिला. गोविंदपुर, जुगसलाई जैसे क्षेत्रों में आजसू पार्टी को बेहतर वोट मिले, जिन्होंने जीत के अंतर को बढ़ा दिया. पूर्वी जमशेदपुर में मुकाबला एकतरफा रहा. भाजपा के कद्दावर नेता वर्तमान में मुख्यमंत्री रघुवर दास ने एक लाख से अधिक मत हासिल कर अपने आस-पास भी कांग्रेस और झाविमो को फटकने नहीं दिया. पूर्वी में झामुमो का संगठन काफी कमजोर है. ऐसी स्थिति में प्रत्याशी को खुद यहां दम लगाना होगा. प्रत्याशी को भाजपा के कुछ भितरघातियों का समर्थन जरूर हासिल होगा, लेकिन वोट झामुमो में टर्न होगा, इसको लेकर संशय बना रहेगा. जमशेदपुर पश्चिम की राजनीति साफ-साफ है. अक्सर यह देखा जाता है कि भाजपा के खिलाफ मजबूत प्रत्याशी के समर्थन में लोग गोलबंद होते हैं. यही कारण है कि पिछले चुनाव में झामुमो- झाविमो के प्रत्याशी को महज 8-10 हजार वोट ही मिले. भाजपा प्रत्याशी ने कांग्रेस प्रत्याशी को कड़ी टक्कर देते हुए मुकाबला 5.5 प्रतिशत अधिक मतों के अंतर से पराजित कर दिया. यहां झामुमो प्रत्याशी के समर्थन में वोट टर्न होना कोई बड़ी चुनौती की बात नहीं दिखती.

2014 लोकसभा चुनाव में विधानसभावार मिले मत

1. विद्युतवरण महतो, भाजपा 2. डॉ अजय कुमार, झाविमो 3. निरुप मोहंती, झामुमो

बहरागोड़ा	घाटशिला	पोटका	जुगसलाई	जमशेदपुर पूर्वी	जमशेदपुर पश्चिम
1.61,648.	1.64,220	1.57,929.	1.93,309	1. 91,138.	1. 89,021.
2.50,014	2.33,717.	2.65,897.	2.73,411.	2.64,351.	2.74,850.
3.27,145	3.37,140	3.33,217	3.25,404	3. 3699.	3. 8906.

कुडलौंगां गांव के वोटर छह किमी दूर जाते हैं वोट देने

प्रतिनिधि ▷ टंडवा

कुडलौंगां गांव(सराढू पंचायत) के वोटर छह किलोमीटर पैदल चल कर वोट देने जाते हैं. यह समस्या ग्रामीण 19 साल से झेल रहे हैं. ग्रामीणों ने पिछले लोकसभा चुनाव में गांव में ही बूथ बनाने की मांग की थी, पर अब तक ग्रामीणों की समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया. गांव के 75 वर्षीय जगदेव साव कहते हैं कि पहले विधानसभा या लोकसभा चुनाव में गांव में ही बूथ होता था. वर्ष 2000 के बाद यहां से बूथ हटा लिया गया. कुडलौंगां गांव की आबादी करीब 1500 है, जिसमें 600 वोटर हैं. ग्रामीणों ने बताया कि लंबी दूरी होने के कारण कई लोग वोट देने नहीं जाते हैं. सबसे ज्यादा परेशानी बुजुर्गों को होती है. बुजुर्ग मतदाता जयबीर सिंह ने बताया कि माओवादियों के वोट बहिष्कार के कारण वर्ष 2000 में यहां वोट नहीं हुआ था, जिसके बाद से यहां पोलिंग बूथ हटा लिया गया. ग्रामीण पंकज साहू, परमानंद मिश्रा, द्वारिका सिंह, रघुवीर साहू, नरेश साहू, संतु यादव आदि ने कहा कि वोट लोकतंत्र का महान पर्व है, इसलिए हमलोग वोट बहिष्कार तो नहीं करेंगे, लेकिन विधानसभा चुनाव में अगर बूथ गांव में नहीं दिया गया तो ग्रामीण वोट बहिष्कार करने के लिए सोचेंगे.

55 बूथों में पड़े थे मात्र 900 वोट

एक वक्त था जब टंडवा प्रखंड में उग्रवाद की तूती बोलती थी. उग्रवादियों के फरमान पर लोग वोट देने तक नहीं जाते थे, पर आज हालात कुछ और है. लोग निर्भीक होकर मतदान कर रहे हैं. 1998 लोकसभा चुनाव में माओवादियों ने वोट बहिष्कार की घोषणा की थी. इसके बावजूद भी लोगों ने वोट दिया था. वोट के बाद उग्रवादियों ने गाडिलौंग के महादेव यादव की अंगुली व नइमुद्दीन अंसारी का हाथ काट दिया था. जिसका असर वर्ष 2000 के विधानसभा चुनाव में पड़ा था. वर्ष 2000 में हुए विधानसभा चुनाव में पुनः माओवादियों ने वोट बहिष्कार की घोषणा की, जिसका व्यापक असर चुनाव पर देखने को मिला. वर्ष 2000 के विधानसभा चुनाव में टंडवा प्रखंड के 55 बूथों में मात्र 800 से 900 मतदान हुआ था. यह मत भी राहम गांव के तीन व नई पारम गांव के एक बूथ पर पड़ा था.

प्रभात चौपाल
हजारीबाग संसदीय सीट

हजारीबाग संसदीय सीट से भाजपा ने वर्तमान सांसद व केंद्रीय मंत्री जयंत सिन्हा को चुनावी मैदान में उतारा है. वहीं महागठबंधन की ओर से कांग्रेस के गोपाल साहू चुनाव लड़ रहे हैं. पूर्व सांसद भुवनेश्वर प्रसाद मेहता सीपीआइ व वाम समर्थक उम्मीदवार हैं. छह मई को पांचवें चरण में हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में मतदान होगा. जनता उम्मीदवारों से अपनी समस्याओं को लेकर उनके विचार जानना चाहती है. चुनावी मैदान में जनता के मुद्दे पर प्रभात चौपाल में हजारीबाग के तीनों प्रत्याशियों से पांच सवाल किये गये हैं. प्रत्याशियों ने सभी सवालों का जवाब खुल कर दिया. **वरीय संवाददाता सलाउद्दीन** की रिपोर्ट.

Q
1. जनता आपको क्यों चुनें?
2. आप दूसरे प्रत्याशी से किस मायने अलग हैं?
3. आपकी प्राथमिकता क्या होगी?
4. ऐसा आप क्या नया करेंगे जो अभी तक आपके क्षेत्र में नहीं हुआ है?
5. संसद में क्षेत्र के कौन से मुद्दे और समस्या आपकी प्राथमिकता में होगी?

25 हजार करोड़ का निवेश हुआ, मेरे पास विजन : जयंत सिन्हा

A1. राष्ट्रीय स्तर पर नरेंद्र मोदी की सरकार ने अभूतपूर्व कार्य किया है. जिसको आगे जारी रखने की आवश्यकता है. मैंने भी अपने लोकसभा क्षेत्र में छोटे बड़े बहुत सारे काम किया हूं. पिछले पांच सालों में हजारीबाग में 25 हजार करोड़ का निवेश हुआ है. जिससे यहां अनेकों बड़ी योजनाएं आयी हैं. हजारीबाग देश के उन चुनिंदा संसदीय क्षेत्रों में से एक है, जहां ऐसा विकास हुआ है.

A2. मैं एक प्रोफेशनल व्यक्ति रहा हूं. कई क्षेत्रों का मुझे अलग से अनुभव रहा है. मैं पढ़ा-लिखा हूं और अपने अनुभव का उपयोग क्षेत्र के विकास के लिए लगातार कर रहा हूं. अपने क्षेत्र के दूर-दराज इलाकों व पंचायतों में एक टीम बना कर काम किया हूं. दूसरी पार्टियों में सेवा का नहीं सत्ता का लोभ है. मेरे पास विकास का विजन है.

A3. किसानों की आय दोगुनी करना, युवाओं के लिए रोजगार, हर घर में बुनियादी सुविधाएं, सबका साथ सबका स्वास्थ्य और आदिवासी मूलवासियों के अधिकारों की सुरक्षा, हजारीबाग में नॉलेज सिटी का निर्माण, हजारीबाग हवाई अड्डा का निर्माण पूरा करना, हजारीबाग मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, अक्षयपात्रा महारसोई घर की शुरुआत कराना, सभी शुरू की गयी योजनाओं को पूरा कराना. हजारीबाग को विकास के मायने में नंबर वन बनाना.

A4. हजारीबाग लोकसभा का नॉलेज हब बनायेंगे, टेक्साटाइल्स उद्योग, किसानों के लिए कोल्ड स्टोरेज, कृषि सुविधाओं का विस्तार, सिंचाई की सुविधा, कृषि सहकारी समिति का निर्माण, खाद प्रसंस्करण प्लांट की स्थापना, हर पंचायत में एक सामुदायिक केंद्र का निर्माण और सभी परियोजनाओं से रोजगार सृजन करायेंगे.

A5. शिक्षा का स्तर बेहतर करना, ताकि पलायन रूके, परियोजनाओं के माध्यम से विकास करना, कौशल का विकास कर रोजागार का सृजन, क्षेत्र में धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन को बढ़ावा देना, हर तरह के ट्रांसपोर्ट सिस्टम बेहतर करना.

मैं हवा-हवाई नेता नहीं, मैं लोगों का दिल नहीं तोड़ूंगा : गोपाल साहू

A1. मैं झारखंड का पुत्र हूं. हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में मेरा जमीन, मकान व रिश्ता है. हजारीबाग के युवकों को रोजगार दिलाने, विस्थापितों को अधिकार व सम्मान दिलाने और सामाजिक समरसता के लिए काम किया हूं.

A2. मैं हवा-हवाई नेता नहीं हूं. मैंने इंग्लैंड से मास्टर ऑफ मैनेजमेंट किया है. पढ़ा-लिखा हूं. सभी से मिलने जुलनेवाला और समस्याओं से रूबरू हूं.

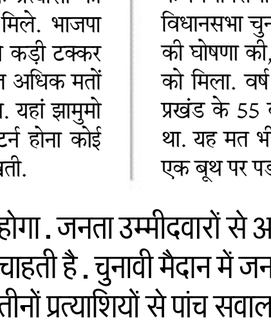

A3. हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में पानी की बहुत बड़ी समस्या है. शहर के लोग जार का पानी खरीद कर पीते हैं. सैकड़ों गांव के लोगों को पीने का पानी नहीं मिलता है. मैं हजारीबाग लोगों के दिलों को तोड़ूंगा नहीं जोड़ूंगा. आपसी भाइचारगी बढाऊंगा. विस्थापितों और स्थानीय लोगों को किसी भी कीमत पर रोजगार दिलाऊंगा. युवाओं की क्षमता को सफल बनाने के लिए संसाधन उपलब्ध कराऊंगा. किसानों के खेतों में सिंचाई व अपने उत्पादन को लागत सौ रुपये और बिक्री 50 रुपये में करने पर विवश हैं, उसे खत्म करूंगा. हजारीबाग गांव से पलायन को रोक कर रोजगार दिलाऊंगा.

A4. गांव-गांव में शुद्ध पेयजल उपलब्ध करायेंगे. जेपीएससी की परीक्षा राज्य बनने के बाद 18 बार की जगह पांच बार हुई है. इससे जो छात्रों की उम्र सीमा की बाधा आ गयी है. उसके लिए स्थानीय नौकरी में प्राथमिकता दिलाऊंगा. महिलाओं के लिए वर्तमान जरूरत के अनुसार रोजगार दिलाना. पर्यटन स्थल जो हैं, उन्हें विकसिक करूंगा.

A5. कोयलांचल क्षेत्र में विस्थापन, भूमि अधिग्रहण, बेरोजगारी और पानी की समस्या के मुद्दों को उठाऊंगा. जिन गांवों से युवकों का पलायन हो रहा है. उन गांवों के लिए रोजगार से संबंधित बड़ी-बड़ी योजनाओं लाऊंगा.

विस्थापितों और बेरोजगार युवकों को नौकरी दिलाना है : मेहता

A1. मेरा 51 वर्ष का राजनीतिक जीवन है. महाजनी प्रथा के खिलाफ केरेडारी बडकागांव में आंदोलन किया. विस्थापन की लड़ाई लड़ी. स्थानीय युवकों को तृतीय और चतुर्थ श्रेणी में बहाल कराया. जिलावार स्थानीय लोगों को शिक्षक में बहाली हो, इसके लिए कानूनी लड़ाई लड़ कर जीता. विनोबा भावे विश्वविद्यालय की स्थापना और सांप्रदायिक सौहार्द्र बनाने के क्षेत्र में काम किया हूं.

A2. भाजपा और कांग्रेस उम्मीदवार की तुलना में 95 प्रतिशत जनता मुझे पहचानती है. मैंने झूठे आश्वासन देकर जनता को ठगने का काम नहीं किया हूं.अधूरी योजनाओं को पूरी दिखा कर जनता से समर्थन नहीं मांग रहा हूं.

A3. जल, जंगल और जमीन का मालिकाना हक दिलाना, विस्थापितों को सम्मान व नौकरी के साथ भूमि अधिग्रहण कानून 2013 का अक्षरसः पालन कराना है. हजारीबाग में सांप्रदायिक सौहार्द्र बनाना.

A4. स्थानीय नौजवानों को रोजगार दिलाना. किसानों के खेतों में सिंचाई और ऋण माफी करवाना. पारा शिक्षकों, सेविका, सहायिका, सहिया व अनुबंधकर्मी का स्थायीकरण कराना.

A5. हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में विस्थापन, रोजगार, स्थानीय लोगों को नौकरी, कोयला खदान और सभी बड़ी कंपनियों में प्रभावित लोगों को नौकरी दिलाना होगा.

जेट एयरवेज के बाद अब एयर इंडिया पर भी लटकी संकट की तलवार, सरकारी कंपनियों एमटीएनएस बीएसएनएल के बाद एयर इंडिया का भी किया बंटाधार! चुनाव के बाद इन कंपनियों का होगा उद्धार, क्योंकि जनता अब लेगी भाजपा से लोकतांत्रिक प्रतिकार!

रणदीप सिंह सुरजेवाला, प्रवक्ता कांग्रेस

मध्यप्रदेश तीन महीने में ही अराजकता का गढ़ बन गया है. मैं कमलनाथ से पूछना चाहता हूं कि क्या यही आपका सुशासन है? बच्चे सुरक्षित नहीं, महिलाएं सुरक्षित नहीं, व्यापारी सुरक्षित नहीं. क्या मध्यप्रदेश में अब केवल अपराधी और भ्रष्टाचारी ही रहेंगे? ऐसे शासन पर धिक्कार है.

शिवराज सिंह चौहान, नेता भाजपा

'फ्लोटिंग वोटर' ही कम अंतर से जीत-हार के प्रमुख नायक

दिलचस्प

महेंद्र तिवारी

लोकसभा चुनाव में हार को जीत में बदलने में 'फ्लोटिंग वोटर' अहम भूमिका निभा सकते हैं. कम अंतर यानी 3 से 5 फीसदी फ्लोटिंग वोटर नतीजे में बड़ा बदलाव कर सकते हैं. पिछले लोकसभा चुनाव में उप्र में आधा दर्जन सीटें ऐसी थीं, जिसे भाजपा पांच प्रतिशत से कम वोटों के अंतर जीती थीं. इसी तरह 10 सीटें ऐसी थीं, जहां जीत-हार का अंतर 10 प्रतिशत से कम था. विश्लेषक तो पहली बार के वोटर से लेकर निजी लाभ-हानि और सरकारों के परफार्मेंस का मूल्यांकन कर मत देने वालों को भी इसी वर्ग में गिन रहे हैं. ऐसे मतदाताओं की तादाद लगातार बदल रही है और राजनीतिशास्त्री इसे राजनीति के लिए बेहतर संकेत मानते हैं. बाबा साहब भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के समाजशास्त्री डॉ विवेकानंद नायक कहते हैं, उप्र की सियासत जाति पर केंद्रित नजर आती है, मगर फर्स्ट टाइम वोटर के पैमाने अलग हैं. यह व्यक्ति विशेष की ओर जा सकता है. प्रत्याशी यदि फिल्मी दुनिया से है या उसे कोई दूसरा प्रत्याशी पसंद आ गया तो वह परिवार से अलग अपना वोट दे सकता है. वह कहते हैं- पिछली बार फर्स्ट टाइम वोटर का झुकाव नरेंद्र मोदी की ओर था. एक ऐसा वर्ग भी है, जो जिसे जीतते देखता है, उसके साथ हो जाता है.

जानें कौन होते हैं फ्लोटिंग वोटर

वोट किसे देना है, यह तय करने में अंतिम समय तक अनिर्णय की स्थिति में रहने वाले मतदाता इस श्रेणी में आते हैं. इनके लिए पार्टी या विचारधारा अहम नहीं. जिस पार्टी के प्रचार से प्रभावित हो जाएं या जिसे जीतता हुआ आंक लें, उधर चले जाते हैं. पार्टी की लीडरशिप या प्रत्याशी से प्रभावित होकर उसके साथ जा सकते हैं. आसपास के प्रभावशाली लोग जिधर जाते हैं, ये भी वही राह अपना सकते हैं.

फर्स्ट टाइम वोटर पर ज्यादा जोर

पीएम मोदी ने पिछले लोकसभा चुनाव में भी फर्स्ट टाइम वोटर को अपने अभियान के केंद्र में रखा था और इस चुनाव में भी वे यही अपील कर रहे हैं. कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और सपा मुखिया अखिलेश यादव युवाओं को जोड़ने पर लगातार फोकस कर रहे हैं. बसपा सुप्रीमो मायावती ने युवाओं को पार्टी की ओर आकृष्ट करने के लिए अपने युवा भतीजे आकाश आनंद को साथ-साथ मंच पर ले जाना और आगे बढ़ाना शुरू कर दिया है.

6 सीटों पर 5 फीसदी से भी कम रहा जीत-हार का अंतर

रामपुर	2.44
संभल	0.49
सीतापुर	4.94
कन्नौज	1.79
बस्ती	3.20
गाजीपुर	3.29

6 सीटें ऐसी, जहां जीत-हार का अंतर 5 से 10 प्रतिशत

सहारनपुर	5.45
आजमगढ़	6.58
लालगंज	7.0
कुशीनगर	9.0
कैसरगंज	9.29
इलाहाबाद	6.95

FAKE NEWS

सच तो यह है

प्रियंका की वायरल तस्वीर शहीद के घर की नहीं

प्रियंका गांधी की एक महिला और एक बच्चे के साथ का फोटो वायरल हो रहा है. इसमें राहुल टेबल पर रखी प्लेट में से कुछ उठाकर खा रहे हैं. दावा किया जा रहा है कि प्रियंका-राहुल एक शहीद के घर हैं. फोटो के साथ लिखा है, जो शहीद के घर जाकर बच्चे का कुरकुरे भी खा गया, देश को क्या छोड़ेगा.

पड़ताल में दावा गलत पाया गया

शामली के ढाबे की है तस्वीर : यह तस्वीर उप्र के शामली के एक ढाबे की है. 20 फरवरी को राहुल और प्रियंका जब शहीद के परिवार से मिलने गये थे, तब रास्ते में इस ढाबे पर रुके थे. इसी दौरान कुछ लोग उनके पास पहुंच गये थे.

ग्राउंड रिपोर्ट. झामुमो अध्यक्ष शिबू सोरेन की बेटी अंजनी पहली बार लड़ रहीं चुनाव

मयूरभंज : अंजनी सोरेन के मैदान में आने से मुकाबला हुआ त्रिकोणीय

बारिपदा से मोनालिसा पंडा

ओड़िशा-झारखंड सीमा पर स्थित मयूरभंज लोकसभा सीट पर इस बार त्रिकोणीय मुकाबला होने जा रहा है. 14.54 लाख मतदाताओं वाली इस सीट पर चुनाव चौथे चरण में 29 को होने वाला है. बीजू जनता दल ने इस बार डॉ देवाशीष मार्डी को उतारा है, जबकि भारतीय जनता पार्टी ने इंजीनियर विश्वेश्वर टुडु को प्रत्याशी बनाया है. वहीं, झारखंड मुक्ति मोर्चा ने इस चुनाव में अंजनी सोरेन को उतारा हैं. अंजनी झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन की बेटी हैं . मयूरभंज सीट में कांग्रेस व झामुमो के बीच सीटों का तालमेल है. इस कारण कांग्रेस इस सीट पर अपना प्रत्याशी नहीं दिया है.

पिछले एक दशक से बीजू जनता दल इस सीट पर सांगठनिक दृष्टि से काफी मजबूत है. बीजद की मजबूती का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस लोकसभा सीट के अधीन आने वाली सभी विधानसभा सीटों पर बीजद का कब्जा है.

देवाशीष मरांडी, बीजद

बीजू जनता दल के निवर्तमान सांसद रामचंद्र हांसदा को चिट फंड धोखाधडी के मामले में काफी समय तक जेल में रहने के कारण पार्टी ने इस बार टिकट नहीं दिया है. उनके स्थान पर बीजद ने झामुमो के टिकट पर पिछली बार लड़े देवाशीष मरांडी को टिकट दिया है.

विश्वेश्वर टुडू, भाजपा

भाजपा ने इस बार विश्वेश्वर टुडू को मैदान में उतारा है. विश्वेश्वर राजनीतिक मैदान में भले ही नये हों, लेकिन वह संघ परिवार के संगठनों से जुडे रहे हैं . इस कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कैडर उनको जीताने के लिए एडी चोटी का जोर लगा रहे हैं.

अंजनी सोरेन, झामुमो

झामुमो ने अंजनी सोरेन को मैदान में उतारा है. उन्हें भी राजनीतिक अनुभव नहीं रहा है, लेकिन झामुमो का इस पूरे लोकसभा क्षेत्र में एक आधार होने के साथ-साथ कांग्रेस के वोट उनके पक्ष में आने की संभावना के कारण उनकी दावेदारी को भी मजबूत माना जा रहा है .

प्रचार में सबने झोंकी ताकत

बीजू जनता दल की ओर से पार्टी के मुखिया तथा मुख्यमंत्री नवीन पटनायक प्रचार अभियान की बागडोर संभाला हुआ है. मुख्यमंत्री इस सीट के विभिन्न स्थानों पर रोड शो व आम सभाओं को संबोधित कर रहे हैं. वे अपने भाषणों में कह रहे हैं कि मयूरभंज के लोगों की हितों की रक्षा केवल बीजद ही कर सकती है. झारखंड के नेता इस सीट पर अपने अपने पार्टी के लिए प्रचार कर चुके हैं . झारखंड के मुख्यमंत्री रघुवर दास तथा पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अपने अपने पार्टी के लिए प्रचार कर चुके हैं. केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, जुएल ओराम समेत राज्य भाजपा के अनेक वरिष्ठ जनजातीय नेता इस सीट पर पार्टी उम्मीदवार के पक्ष में प्रचार कर रहे हैं.

हेमंत सोरेन बहन अंजली के लिए मांग रहे वोट

उधर, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भी यहां अपनी बहन के लिए प्रचार कर रहे हैं . पिछले दिनों अपने भाषण में सोरेन ने कहा था मयूरभंज में झामुमो का अच्छा आधार है. इस कारण इस चुनाव में झामुमो को सफलता मिलेगी.

कांग्रेस-झामुमो गठबंधन के कारण लड़ाई दिलचस्प

इस लोकसभा सीट पर इस बार मुख्य चुनावी मुकाबला बीजद व भाजपा के बीच होना था, लेकिन झामुमो व कांग्रेस के बीच इस सीट को लेकर गठबंधन होने के कारण मुकाबला दिलचस्प हो गया है. यह मुकाबला कितना कड़ा होगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि कांग्रेस के वोट कितना झामुमो के उम्मीदवार के पक्ष में ट्रांसफर होता है .

2014 के लोकसभा चुनाव के परिणाम

उम्मीदवार/पार्टी	वोट	वोट%
रामचंद्र हांसदा, बीजद	3,93,779	37.38
डॉ एनआर मुर्मू, भाजपा	2,70,913	25.72
डॉ देवाशीष मरांडी, झामुमो	1,72,984	16.42%
श्याम सुंदर हांसदा, कांग्रेस	1,42,165	13.50%
जीत की अंतर	1,22,866	

16 बार आम चुनाव, कौन कितनी बार जीता

झारखंड पार्टी : 2 बार : 1951, 1957
एसयूसीआइ : 1 बार : 1962
स्वतंत्र पार्टी : 1 बार : 1967
प्रजा सोशलिस्ट पार्टी : 1 बार : 1971
जनता पार्टी : 1 बार : 1977
कांग्रेस : 5 बार : 1980, 1984, 1989, 1991, 1996
भाजपा : 2 बार : 1998, 1999
झामुमो : 1 बार : 2004
बीजद : 2 बार : 2009,014

चुनावी प्रतिबद्धता

मतदान के लिए की 360 किमी की साइकिल यात्रा

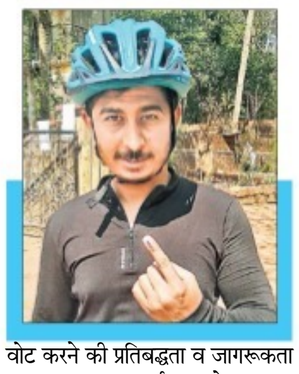

वोट करने की प्रतिबद्धता व जागरूकता का असाधारण प्रदर्शन करते हुए 29 वर्षीय अनिकेत ने 360 किमी साइकिल चलायी. वोटिंग के लिए बेंगलुरु से मंगलुरु तक 360 किमी साइकिल चला कर आये अनिकेत पहली बार वोट कर रहे 15 लाख युवाओं के रोल मॉडल बन चुके हैं. देश के प्रमुख एडवटाइजिंग कंपनी एडसिंडिकेट के कर्मचारी अनिकेत का कहना हैं कि देश के हर नागरिक को मतदान के प्रति प्रतिबद्धता दिखानी चाहिए. उनकी युवाओं से अपील है कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिक के रूप में वोट करें और देश को सुदृढ़ बनाएं.

चुनावी रंग

'द ग्रेट खली' ने पीएम मोदी के समर्थन में मांगा वोट

कोलकाता. डब्ल्यू डब्ल्यू इ फेम द ग्रेट खली उर्फ दिलीप सिंह राणा ने शुक्रवार को जादवपुर लोकसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार अनुपम हाजरा के पक्ष चुनाव प्रचार किया. वह श्री हाजरा के नामांकन दाखिल करने के समय अलीपुर जिला मुख्यालय में उपस्थित थे. उल्लेखनीय है कि श्री हाजरा पहले तृणमूल कांग्रेस के सांसद थे, लेकिन चुनाव के पहले वे तृणमूल से नाता तोड़ कर भाजपा में शामिल हो गये हैं. भाजपा ने उन्हें फिल्म अभिनेत्री तृणमूल कांग्रेस की उम्मीदवार मिमी चक्रवर्ती के खिलाफ उम्मीदवार बनाया है. मिमी चक्रवर्ती ने भी शुक्रवार को नामांकन पत्र दाखिल किया. इस मौके पर खली ने कहा कि अनुपम हाजरा उनका छोटा भाई है, उसे ज्यादा-ज्यादा मत देकर विजयी बनाएं, ताकि वह स्थानीय समस्या को संसद तक पहुंचा सके तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फिर से विजयी बनाएं, क्योंकि उन्होंने विश्व में भारत का नाम ऊंचा किया है. अनुपम हाजरा ने कहा कि खली से उनकी बात हुई थी तथा उन्होंने उन्हें आमंत्रित किया था. उनके मात्र आमंत्रण से ही वह आये और उनका साथ दिया. उन्होंने कहा कि हालांकि ग्रेट खली की रेसलिंग प्रतियोगिता चल रही थी, लेकिन वे प्रतियोगिता छोड़ कर उनके पक्ष में चुनाव प्रचार के लिए कोलकाता आये.

चुनावी किस्सा

जब हमारे राष्ट्र कवि बने राज्यसभा सदस्य

रामधारी सिंह दिनकर

सत्ता के करीब रह कर भी जनता के बीच रहे बेहद लोकप्रिय

1952 में राज्यसभा के सदस्य चुने गये, 12 साल सांसद रहे

आजादी से पहले विद्रोही कवि और उसके बाद राष्ट्रकवि के रूप में ख्यात रामधारी सिंह दिनकर राजनीतिक में भी रह चुके हैं. हिंदी साहित्य के इतिहास में ऐसे लेखक बहुत कम हुए हैं, जिन्होंने सत्ता के करीब रहने के बाद भी जनता के बीच अपनी लोकप्रियता बनाये रखी. 1952 में जब भारत की प्रथम संसद अस्तित्व में आयी, तो उन्हें राज्यसभा सदस्य चुना गया. वह 12 साल सांसद रहे. वह 1964 से 1965 तक भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे. 24 अप्रैल, 1974 को उनका निधन हो गया.

राजस्थान के पाली में आस्था पर भारी सर्जिकल स्ट्राइक

पाली से अंजनी कुमार सिंह

पाली राजस्थान की लोकसभा की ऐसी सीट है, जहां 1989 से (2009 को छोड़ कर) भाजपा लगातार छह बार चुनाव जीती है. कांग्रेस ने इस सीट से सबसे ज्यादा आठ बार लोकसभा के आम और उपचुनाव जीते हैं.

इस लोकसभा क्षेत्र के सूरज पॉल इलाके के प्रसिद्ध चाय दुकानदार भूरा राम चौधरी दूध में पानी नहीं मिला पाते हैं, कारण यहां दूध से ज्यादा पानी की किल्लत है. तीन दिन में एक बार पानी आता है. सुदूर गांवों की स्थिति तो और भी खराब है. पाली शहर से 20 किलोमीटर दूर सरदार समन गांव के गजे सिंह राठौर कहते हैं, 20 सालों से यहां की मांग रही है कि जोधपुर से आने वाली पानी की पाइप-लाइन को यहां तक लाया जाए, पर किसी सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है. पाली शहर के लिए जवाई डैम (सुमेरपुर) से तीन दिन में एक बार एक से डेढ़ घंटे के लिए पानी आता है. शहर को पानी की आपूर्ति करने वाला पालिका सिटी टैंक पिछले दो साल से सूखा पड़ा है.

पाली, जालोर और सिरोही जिलों में विभिन्न धर्मावलंबियों की तादाद काफी है. जगह-जगह इनके आस्था के केंद्र देखे जा सकते हैं, पर इस बार मोदी सरकार की सर्जिकल और एयर स्ट्राइक के कारण

इन जिलों में आस्था से ज्यादा राष्ट्रवाद हावी है. यही कारण है कि पाली, जालोर और सिरोही को भाजपा सुरक्षित सीट मान रही है. रीतेश अग्रवाल कहते हैं, मोदी की वजह से भाजपा की स्थिति मजबूत है. किसी भी दल के एमपी या एमएलए से हमलोग खुश नहीं है, लेकिन राज्य में सीएम और केंद्र में मोदी के काम से हमलोग खुश हैं.

पेयजल सबसे बड़ी समस्या

पाली में पेयजल और औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले पानी से बंजर हो रही खेती की जमीन अहम मुद्दा है. पिछले लोकसभा चुनाव में राज्य की सभी सीटों पर जीत दर्ज करने वाली भाजपा के लिए जहां अपने पुराने प्रदर्शन को दोहराने की चुनौती है, वहीं कांग्रेस के लिए चार माह पहले मिले जनसमर्थन को बरकरार रखने की.

जातीय समीकरण (लाख में)

कुल मतदाता :	22.36
जाट :	3.40
सीरवी	1.75
मुस्लिम	1.25
एससी-एसटी	6.00
राजपूत, विश्नोई, अन्य पिछड़ा वर्ग	9.96

औद्योगिक शहर की आबादी मिश्रित

पाली राजस्थान का औद्योगिक शहर है. यहां की आबादी मिश्रित है. यहां की प्रसिद्ध उम्मेद मिल के कारण इसकी अलग पहचान है. यह जाट, सीरवी, विश्नोई, राजपूत और अनुसूचित जाति-जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है.

पाली संसदीय सीट के अंतर्गत विस क्षेत्र : कुल विस सीट : 08
भाजपा : 4, कांग्रेस : 2, निर्दलीय : 2

रोचक जानकारी

दिल्ली : लोस चुनाव लड़ रहे 173 उम्मीदवारों में से केवल 13 महिलाएं

नयी दिल्ली. दिल्ली में इस बार के लोस चुनाव में कुल 173 उम्मीदवार मैदान में है उनमें से मात्र 13 ही महिलाएं हैं. सभी बड़ी पार्टियों कांग्रेस, भाजपा और आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में केवल एक-एक महिला उम्मीदवार खड़ा किया है. दिल्ली में 12 मई को मतदान होना है. साल 2014 में राष्ट्रीय राजधानी से लोकसभा चुनाव लड़ रहे 150 उम्मीदवारों में से 13 ही महिलाएं थीं. इन 13 में से केवल एक, भाजपा की मीनाक्षी लेखी संसद पहुंचीं थी. साल 2009 में 160 प्रत्याशियों में 18 महिलाएं थी और उनमें से केवल एक निर्वाचित हुई. कांग्रेस ने अपनी वरिष्ठ नेता और दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को, भाजपा और आप ने क्रमशः वकील-नेता लेखी और आतिशी मार्लेना को उम्मीदवार बनाया है.

विडंबना

सुरक्षित सीटों से जीते सांसदों में से 40 फीसदी को इस बार मौका नहीं, 27 सीटों पर बदले उम्मीदवार

भाजपा ने अपने 96 सांसदों पर नहीं जताया भरोसा

- **पार्टी ने सुरक्षित सीटों के 40% सांसदों का टिकट काटा**
- **गुजरात में 40%, उप्र में 30% सांसदों का हुआ पत्ता साफ**

नयी दिल्ली से हिमांशु मिश्र

सांसदों के खिलाफ नाराजगी का असर चुनाव परिणाम पर नहीं पड़ने देने के लिए भाजपा ने सुरक्षित सीटों पर काबिज सांसदों के खिलाफ बड़ी सर्जिकल स्ट्राइक की है. पार्टी ने बीते चुनाव में सुरक्षित सीटों से जीते सांसदों में से 40 फीसदी को इस बार मौका नहीं दिया है. पहली बार सबसे अधिक सीटों (437) पर चुनाव मैदान में उतरने वाली पार्टी ने बागियों-बुजुर्गों समेत 96 सांसदों से दूरी बनायी है. इनमें गुजरात के 25 में से 10, उत्तर प्रदेश के 71 में से 20, छत्तीसगढ़ के 10 में से 10 तो असम के 7 में से 5 सांसद टिकट पाने में नाकाम रहे हैं.

गौरतलब है कि लोकसभा में सुरक्षित सीटों की संख्या 131 (84 अनुसुचित जाति और 47 अनुसुचित जनजाति) है. पिछले चुनाव में भाजपा को इनमें 67 सीटों पर जीत हासिल हुई थी. इस चुनाव में पार्टी ने इनमें से 27 सीटों पर उम्मीदवार बदल दिये हैं.

उत्तर प्रदेश की 13 सुरक्षित सीटों में से 7 पर बदले उम्मीदवार

सुरक्षित सीटों पर सांसदों के खिलाफ सबसे बड़ी सर्जिकल स्ट्राइक यूपी में हुई है. यहां पार्टी ने 13 सुरक्षित सीटों पर से 7 उम्मीदवार बदल दिए हैं. इसी प्रकार महाराष्ट्र में 3, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में 5-5 सुरक्षित सीटों पर सांसदों को टिकट से वंचित किया गया है.

उत्तर प्रदेश में बागियों सहित 21 सांसदों पर गिरी गाज

भाजपा ने यूपी में पिछले चुनाव में 71 सीटों पर जीत हासिल की थी. इस बार दो बागियों सहित पार्टी ने 21 उम्मीदवारों को टिकट से वंचित किया. इनमें संभल से सत्यपाल सैनी, शाहजहांपुर से कृष्णा राज, फतेहपुर सीकरी से बाबूलाल, हरदोई से अंशुल, मिश्रिख से अंजुबाला, संतकबीरनगर से शरद त्रिपाठी, देवरिया से कलराज मिश्र, अंबेडकरनगर से हरिओम पांडे, हाथरस से राजेश दिवाकर, रामपुर से नैपाल सिंह, इटावा से अशोक दोहरे, कानपुर से मुरलीमनोहर जोशी, बाराबंकी से प्रियंका रावत, कुशीनगर से राजेश पांडे, बलिया से भरत सिंह, मछलीशहर से रामचरित्र निषाद, राबर्ट्सगंज से छोटेलाल शामिल हैं. बागियों में शामिल बहराइच से सावित्री फूले, इलाहाबाद से श्यामाचरण शुक्ल और इटावा से अशोक दोहरे दूसरे दल से चुनाव लड़ रहे हैं.

सुरक्षित सीटों पर सबसे अधिक गाज क्यों

पार्टी का शुरू से ही सुरक्षित सीटों पर व्यापक प्रभाव रहा है. यह प्रभाव पार्टी की स्थापना के बाद लगातार बढ़ता गया है. पार्टी नहीं चाहती कि सांसदों के प्रति नाराजगी का असर चुनाव के प्रदर्शन पर पड़े. आतंरिक रिपोर्ट में भी सुरक्षित सीटों से जुड़े सांसदों के खिलाफ ही सर्वाधिक नाराजगी की बात सामने आई थी. यही कारण है कि टिकट पाने में नाकाम रहने वालों में सबसे बड़ी संख्या सुरक्षित सीटों से जुड़े सांसदों की है.

कार्टून कोना बीबीसी